PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

जून 2009 ISSUE 0609 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

आप किस पर विश्वास करते हैं?

विश्वास क्या है?

"विश्वास उन बातों की स्थिर प्रतीक्षा है, जिनकी हम आशा करते हैं और उन वस्तुओं के अस्तित्व के विषय में द ढ़ धारणा है, जिन्हें हम नहीं देखते।"(इब्रानियों 11:1)

विश्वास की यह परिभाषा हमें पवित्र बाइबिल से मिलती है। इसका यदि हम और खुलासा करें तो हम कह सकते हैं, 'विश्वास उन वस्तुओं के अस्तित्व के विषय में द ढ़ धारणा है, जिन्हें हम नहीं देखते, न सुनते, न सूँघते, न चखते और न स्पर्श कर सकते हैं।' उदाहरण के लिए जैसे कि हम न तो स्वर्ग को अपनी इन प्राकृतिक आँखों से देख सकते हैं, न ही हम प्रभु येशु का, पिता परमेश्वर का या स्वर्गदूतों का स्पर्श कर सकते हैं या देख सकते हैं जब तक कि हम स्वंय स्वर्ग में न पहुँच जायें, पर हम उनके **अस्तित्व** में विश्वास करते हैं। लेकिन यह कहना कि मैं विश्वास करता हूँ कि मेरे शरीर में खून बह रहा है, विश्वास नहीं कहलायेगा क्योंकि यह तो **वास्तविक** है जिसे हम **प्रत्यक्ष** देख सकते व स्पर्श भी कर सकते हैं।

विश्वास मुक्ति, अनन्त जीवन व ईश्वरीय दया, प्रेम व आनन्द की स्थिर प्रतीक्षा है। विश्वास भूत काल को ही नहीं, भविष्य काल को भी देख लेता है, पर उनका परिपूर्ण ज्ञान नहीं प्रदान करता।

आपका विश्वास किस पर है?

लोग कहते हैं, "अरे! विश्वास पर तो हम जिन्दा हैं और यह दुनिया टिकी हुई है।" पर सवाल यह उठता है कि आखिर हमारा यह विश्वास किस पर है? उस पर जो इस धरती का है और इस धरती में ही मिल जायेगा (जैसे कि कोई मनुष्य, पशु या पक्षी, सूर्य, चन्द्रमा या तारे, निर्जीव पत्थर या मूर्ति इत्यादि) या उस पर जो इस सारे संसार का एकमात्र रचयिता है, वह सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापी, सर्वज्ञानी, अद श्य, अतुल्य, अनादि-अनन्त, सर्वोच्च स ष्टिकर्ता परमेश्वर जिसके शब्द मात्र से सब कुछ अस्तित्व में आ गया और जो सभी का भूत और भविष्य जानता है, जिसके वश में यह सारी स ष्टि है और जिसके जाने बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता, हमारे सिर का एक बाल (जो उसने गिना हुआ है) भी नहीं गिर सकता? ध्यान रहे कि हमारा विश्वास उस पर न हो जो स्वंय को भी बचा नहीं सकता, जो निर्जीव हो या हमें कुछ दे नहीं सकता हो, जो पार्थिव हो और नष्ट होने वाली हो जैसे कोई मूर्ति, मंत्र पढ़ी हुई अँगूठी, तावीज़, धागे, कपड़े, पत्थर, मणि या आभूषण इत्यादि।

कलीसिया हमें एक प्रार्थना द्वारा सिखाती है कि हमें किस पर विश्वास करना चाहिए जिस प्रार्थना को हम कहते हैं– **प्रेरितों का धर्मसार** (**जीवन-धाम** की प्रार्थना पुस्तक "नया जीवन" में प ष्ठ संख्या 22 पर)। यह प्रार्थना सिखाती है कि हमें **स ष्टिकर्ता पिता परमेश्वर पर, उसके एकलौते पुत्र मुक्तिदाता प्रभु येशु पर, उनके मानवीय अवतरण, दुःखभोग, म त्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण व द्वितीय आगमन पर, पवित्र आत्मा पर, कैथलिक कलीसिया, धर्मियों की सहभागिता, पापों की क्षमा, शरीर के पुनरूत्थान और अनन्त जीवन पर विश्वास करना चाहिए।**

प्रभु येशु, जो **मार्ग, सत्य और जीवन** है और अपने विश्वासियों के बीच आज भी जीवित एवं कार्यरत हैं, पर विश्वास करने से हम पापों से मुक्ति और अनन्त जीवन प्राप्त कर सकेंगे। उनके पवित्र एवं जीवनदायी, शक्तिशाली वचनों व आज्ञाओं पर, जो पवित्र बाइबिल में अभिलिखित है, हमें विश्वास करना व उसका पालन करना चाहिए जिससे हम पिता परमेश्वर की प्रिय सन्तान बन जायें। "पूरा **धर्मग्रन्थ** (बाइबिल) **ईश्वर की प्रेरणा** से लिखा गया है। वह **शिक्षा देने** के लिए, **भ्रान्त धारणाओं का खण्डन करने** के लिए, **जीवन के सुधार** के लिए और **सदाचरण का प्रशिक्षण देने** के लिए उपयोगी है, जिससे **ईश्वर-भक्त सुयोग्य** और हर प्रकार के **सत्कार्य के लिए उपयुक्त** बन जाये।" (**2तिमथी 3:16-17**)

विश्वास की प्राप्ति कैसे होगी?

ईश्वर किसी व्यक्ति को विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं करता और न ही दबाव डालता है क्योंकि उसने ही तो मनुष्य को आज़ादी दी है–

शेष भाग प ष्ठ 2 पर ★

अति पवित्र संस्कार की कुवाँरी मरियम से प्रार्थना

पर्व दिवस – जून 20

हे पवित्र कुँवारी मरियम, येशु की माँ! और हमारी कोमल हृदय माता, हम तुझे अति पवित्र संस्कार की कुँवारी मरियम के नाम से पुकारते हैं, क्योंकि तुम ही मुक्तिदाता, जो पवित्र रोटी में सदा जीवित रहता है, की माँ हो, और इसलिए भी क्योंकि वह खून ही है जिससे वह हमारा पालन-पोषण करता है। हम इस नाम से तुझे पुकारते हैं क्योंकि आप ही सभी कृपाओं की श्रेष्ठ व मुख्य व्यवस्थापिका हैं और आपने ही सबसे पहले सभागृह में रहते हुए यूखीरस्तीय जीवन का निर्वाह किया था।

अपने जीवन के उदाहरण से हमें सिखा कि कैसे पवित्र मिस्सा बलिदान के समय हमें उचित योगदान देना चाहिए; कैसे हमें योग्य रीति से प्रार्थना करनी चाहिए और कैसे हमें वेदी के अति पवित्र संस्कार की बारम्बार आराधना करनी चाहिए।

हे अति पवित्र संस्कार की कुँवारी मरियम! सब: हमारे लिए प्रार्थना कर।

येशु ने कहा, "जब तुम वेदी पर अपनी भेंट चढ़ा रहे हो और तुम्हें वहाँ याद आये कि मेरे भाई को मुझसे कोई शिकायत है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ कर पहले अपने भाई से मेल करने जाओ और तब आ कर अपनी भेंट चढ़ाओ।" (मत्ती 5:23-24)

आप किस पर विश्वास करते हैं ...?

प ष्ठ 1 का शेष भाग ★

सोचने की, निर्णय लेकर उसके अनुसार कर्म करने की। विश्वास न तो खरीदने से कहीं मिलता है और न ही कहीं से चुराया जा सकता है। हाँ, वह बाँटा ज़रूर जा सकता है। यह हम याद रखें कि :

★ **विश्वास** ईश्वर का दिया मुफ्त वरदान है। और येशु पर विश्वास कर हमें पापमुक्ति का भी मुफ्त वरदान मिल जाता है।**(रोमियों 3:22-24)**

★ **विश्वास** पवित्र आत्मा के फलों में से एक है। **(पढ़ें गलातियों 5:22)**

★ **विश्वास** ईश्वर के वचन को सुनने, पढ़ने, अध्ययन करने, प्रचार करने व पालन करने से बढ़ता है। **(पढ़ें रोमियों 10:14-17)**

★ **येशु** हमारे **विश्वास** के प्रर्वतक हैं और उसे पूर्णता तक पहुँचाते हैं।**(पढ़ें इब्रानियों 12:2)**

★ ईश्वरीय अनुभवों को बाँटने से **विश्वास** की व द्धि होती है। जब एक व्यक्ति अपनी गवाही देता है और दूसरों को धन्यवाद-भरे हृदय से यह बताता है कि ईश्वर ने उसे क्या-क्या कृपाएँ व चंगाईयाँ दीं हैं, उसके जीवन को कैसे बदल दिया है, उसकी प्रार्थनाओं को सुन कैसे उसकी ज़रूरतों को पूरा किया है, उसे संकट, बुराई, दुर्घटना, या महामारी से कैसे बचाया है, तो निश्चिय ही वह श्रोताओं के मन में विश्वास उत्पन्न कर देता है। दूसरी तरफ प्रभु उसके विश्वास की व द्धि करता है।

विश्वास में बने कृपापात्र धार्मिक जन:

पवित्र बाइबिल बताती है,**"धार्मिक मनुष्य अपने विश्वास के द्वारा जीवन प्राप्त करेगा।" (गलातियों 3:11) "हृदय से विश्वास करने पर** (कि ईश्वर ने प्रभु येशु को म तकों में से जिलाया) **मनुष्य धर्मी बनता है और मुख से स्वीकार करने पर** (कि येशु प्रभु हैं) **उसे मुक्ति प्राप्त होती है।** धर्मग्रन्थ कहता है, **'जो उस पर विश्वास करता है, उसे लज्जित नहीं होना पड़ेगा'।" (रोमियों 10:9-11; 4:24)**

विश्वास के कारण हमारे पूर्वज ईश्वर के कृपापात्र बने जिसमें **हाबिल, हेनोख, नूह, इब्राहीम (गलातियों 3:6-14)- जो विश्वास में हमारे पिता कहलाये जाते हैं, इसहाक, याकूब, यूसुफ, मूसा, न्यायकर्ता गिदियोन, बराक, समसोन और यिफ्तह, सभी नबी, राजा दाऊद व राजा सुलेमान इत्यादि** शामिल हैं। **(पढ़ें इब्रानियों 11:2-40)**

विश्वास के कारण **जीवन-धाम** में हज़ारों लोग हर इतवार प्रभु के चरणों में आते हैं, उनसे प्रार्थना करते, उन्हें स्तुति-धन्यवाद देते, उनकी गवाही बड़े उत्साह से देते, उनके पवित्र वचनों व सुसमाचार को बड़े ध्यान से व शान्तिपूर्वक सुनते तथा उसे अपने जीवन में ढालने का पूरा प्रयास करते हैं। इस प्रकार वे धार्मिक माने जाते

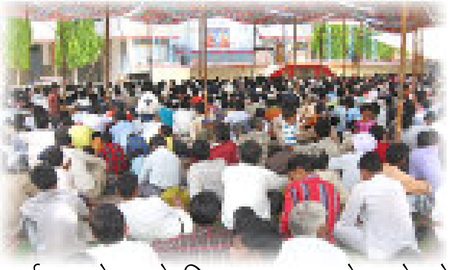

व ईश्वर के अपने प्रिय जन कहलाये जाते। वे अपने निष्कपट विश्वास के कारण प्रभु के भजनों में लीन हो जाते, उनके पवित्र दर्शन पाते, अदभुत चमत्कार देखते और शारीरिक एवं मानसिक चंगाई पाते हैं। विश्वास के कारण ही अधिकांश जन जीवन-धाम में आकर अपने सिर पर हाथ रखवा कर आशीष करवाते, पानी और तेल की आशीष करवाते, क्रूस, प्रभु का लॉकेट और फोटो, पवित्र बाइबिल, 'नया जीवन' की किताब इत्यादि ले जाते हैं। शायद उसी विश्वास के कारण आप भी इस मासिक पत्रिका को अभी पढ़ रहे हैं। यह विश्वास होना बहुत ही ज़रूरी है क्योंकि इसके बगैर कोई चमत्कार या चंगाई संभव नहीं है ठीक उसी तरह जैसे प्रभु येशु ने अपने ही नगर नाज़रेत में लोगों के अविश्वास के कारण चमत्कार नहीं दिखाया। **(मत्ती 13:54-58)** उन्होंने बेथसाइदा, खोराज़िन और कफ़रनाहूम जैसे अविश्वासी नगरों को भी धिक्कारा था।**(मत्ती 11:20-24)** इसलिए हम में से कोई अपना हृदय कठोर कर अविश्वासी न बने, कोई प्रभु के प्रेम, दया व कृपा का तिरस्कार कर मुक्ति से वंचित न हो जाये। परख कर देखो कि प्रभु कितना भला है !

विश्वास की आवश्यकता:

1. ईश्वर का **कृपापात्र** बनने के लिए। **(इब्रानियों 11:2, 6, 39)**
2. ईश्वर की **सन्तति** व प्रभु येशु के **भाई-बहन** बनने के लिए। **(गलातियों 3:26; लूकस 8:21)**
3. **अनन्त जीवन** की प्राप्ति के लिए। **(योहन 3:16,36)**
4. **दोषमुक्त** होने के लिए। **(योहन 3:18;5:24)**
5. ईश्वर से **वरदान** की प्राप्ति व अपने **उद्धार** और **पापमुक्ति** के लिए।**(गलातियों 2:16;3:2,5)**
6. **प्रार्थना** करने की **प्रेरणा** देने के लिए व **प्रार्थनाओं** की सुनवाई के लिए । **(योहन 16:23-24; मारकुस 11:24; रोमियों 10:14)**

विश्वास के फल:

सन्त याकूब बताते हैं कि कर्मों के अभाव में विश्वास व्यर्थ है। वह कहते हैं, **"जिस तरह आत्मा के बिना शरीर निर्जीव है, उसी तरह कर्मों के अभाव में विश्वास निर्जीव है।"(याकूब 2:26)** कर्मों द्वारा विश्वास पूर्णता प्राप्त कर सकता है। विश्वास के फल हैं– आज्ञाकारिता, प्रेम, सेवा, धार्मिकता, परोपकार, सहनशीलता और धैर्य।

विश्वास की शक्ति:

जो प्रभु पर द ढ़ विश्वास रखता है, उसके जीवन में कुछ भी संभव है और प्रभु चाहे तो उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं।**(मारकुस 9:23; 10:27)**

प्रभु येशु ने यह प्रतिज्ञा अपने विश्वासी अनुयायियों के लिए दी है,**"सुसमाचार पर विश्वास करने वाले ये चमत्कार दिखाया करेंगे। वे मेरा नाम लेकर अपदूतों को निकालेंगे, नवीन भाषाँए बोलेंगे और साँपों को उठा लेंगे। यदि वे विष पियेंगे, तो उस से उन्हें कोई हानि नहीं होगी। वे रोगियों पर हाथ रखेंगे और रोगी स्वस्थ हो जायेंगे।"(सन्त मारकुस 16:17-18)** प्रभु हमें यह भी प्रतिज्ञा देते हैं, **"तुम जो कुछ प्रार्थना में माँगते हो, विश्वास करो कि वह तुम्हें मिल गया है और वह तुम्हें दिया जायेगा। (मारकुस 11:24)**

"मैं तुम लोगों से कहता हूँ जो मुझमें विश्वास करता है, वह स्वयं वे कार्य करेगा, जिन्हें मैं करता हूँ। वह उन से भी महान् कार्य करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जा रहा हूँ।"(योहन 14:12)

विश्वास की शक्ति असीम है। आज भी हम ऐसे महान् कार्य **जीवन-धाम** में सुनते व देखते हैं जैसे प्रभु येशु ने अपने समय में दिखाये थे और जिन्हें हमने पहले कभी न ही सुना, न देखा और न ही अनुभव किया है।

विश्वास के उत्तम उदाहरण:

पवित्र बाइबिल में, विशेष रूप से सुसमाचार व प्रेरित-चरित में, हम अनेक लोगों के द ढ़ विश्वास (येशु पर विश्वास) के विषय में पढ़ते हैं जिनके कारण अनेक चमत्कार व चंगाईयाँ हुईं। उनमें से प्रमुख कुछ विश्वास से प्रेरित कार्य करने वाले लोगों का उल्लेख हम करेंगे – क) **रोमन शतपति (मत्ती 8:5-10,13),** ख) **रक्तस्राव-पीड़िता स्त्री (मत्ती 9:20-22),** ग) **सरूफ़िनीकी स्त्री (मारकुस 7:24-29) ,** घ)**अर्द्धांगरोगी (मत्ती 9:2-8) ,** ड.) **दो अन्धे (मत्ती 9:27-30),** च) **जन्म से लँगड़े (प्रेरित-चरित 14:8-10)**

विश्वास की विभिन्न मात्रा व श्रेणियाँ:

विश्वास ईश्वर द्वारा प्रदत्त मुफ्त वरदान है जिसे ईश्वर सबको भिन्न-भिन्न मात्रा या श्रेणियों में देता है। इसलिए जिसे ईश्वर ने विश्वास का वरदान दिया है, वह न तो किसी के विश्वास को तोड़े और न ही किसी के अविश्वास पर आश्चर्य करे या दोष लगाये। उसके लिए वह ईश्वर को धन्यवाद दे, उसे दूसरों क साथ बाँटे, जागते हुए प्रार्थना करते रहे जिससे वह अपने विश्वास को और आगे बढ़ा सके, उसे अपने कर्मों में चरितार्थ कर दूसरों के विश्वास की व द्धि का साधन बने। सन्त पौलुस कहते हैं कि **'ईश्वर द्वारा प्रदत्त विश्वास के अनुरूप हर एक अपने विषय में सन्तुलित विचार रखे'।(रोमियों 12:3)**

पर आपका विश्वास कैसा है?

पवित्र बाइबिल से पढ़ कर आप जांच कर देख लें कि आपके विश्वास की मात्रा इन निम्नलिखित दिये विश्वास की मात्राओं में से किससे मेल खाती है–

शेष भाग प ष्ठ 4 पर

प्रभु येशु ने कहा,"जो अपने भाई पर क्रोध करता है, वह कचहरी में दण्ड के योग्य ठहराया जायेगा। यदि वह अपने भाई से कहे, 'रे मूर्ख!', तो वह महासभा में दण्ड के योग्य ठहराया जायेगा और यदि वह कहे, 'रे नास्तिक!', तो वह नरक की आग के योग्य ठहराया जायेगा।"(मत्ती 5:22)

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

प्रभु येशु ने इन्हें सालों पुराने घुटनों के दर्द से मुक्ति दी व चलने-फिरने की शक्ति दी!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा!

मैं, **हरबंस लाल** (उम्र-47 वर्ष), (ऊपर चित्र में बायीं ओर) करीब 3 हफ्तों से यहाँ "जीवन-धाम" की प्रार्थना सभा में भाग ले रहा हूँ। मेरे घुटनों व कमर में पिछले बीस सालों से रोज़ दर्द उठता था। कहीं भी बहुत देर तक बैठने के बाद मैं खड़ा ही नहीं हो पाता था। मैंने कई डॉक्टरों को दिखाया पर कोई भी इलाज सफल नहीं हुआ।

पहली बार जब मैं यहाँ आया था तो मुझे बैठने व उठने में बहुत तकलीफ हो रही थी। पर उसी दिन प्रार्थना के दौरान मुझे दर्द में बहुत राहत मिल गई। तीसरे हफ्ते से प्रभु पर विश्वास रख मैंने दवा लेनी ही छोड़ दी। आज जब घोषणा हुई कि प्रभु कुछ लोगों को चलने-फिरने की शक्ति दे रहे हैं व कुछ लोगों का कमर व पैर दर्द ठीक कर रहे हैं, तो मैं स्टेज की ओर अपनी गवाही देने के लिए आ गया। **हरबंस लाल,** फरीदाबाद

मैं, **विद्या प्रसाद**(उम्र-75 वर्ष), (ऊपर चित्र में बायीं ओर से दूसरे) करीब 4 महीनों से यहाँ "जीवन-धाम" की प्रार्थना सभा में भाग ले रहा हूँ। मेरे पैरों व कमर में पिछले 10-12 सालों से बहुत दर्द होता था। कहीं बैठ जाने के बाद मैं आधे घण्टे तक उठ ही नहीं पाता था क्योंकि मेरे पैरों में रक्त का बहाव घुटनों के पीछे रूक जाता था जिससे मेरे पैर सुन्न पड़ जाते थे। इस कारण मैं ज्यादा दूर तक चल भी नहीं पाता था।

यहाँ जीवन-धाम में आने पर मुझे बैठने व उठने में आराम मिल गया। प्रभु ने अपने वचन की शक्ति से मुझे स्पर्श कर मेरे पैरों को ठीक कर दिया और मुझे अपना साक्षी बना दिया। आल्लेलूया!

विद्या प्रसाद, फरीदाबाद

मैं, **फ्रीदा** (उम्र-53 वर्ष), (ऊपर चित्र में बायीं ओर से पहली महिला) यहाँ "जीवन-धाम" की प्रार्थना सभा में कुछ महीनों से भाग ले रही हूँ। मेरे घुटनों में पिछले साल के अगस्त महीने से दर्द हो रहा था। मैं न तो सीढ़ियाँ चढ़ पाती थी और न ही घुटने पूरे मोड़ पाती थी।

किसी सज्जन के बताने पर मैं यहाँ आने लगी। आज रोग-चंगाई की घोषणा होने पर मैं स्टेज की ओर अपनी गवाही देने के लिए आई और बड़े आराम से सीढ़ियाँ चढ़ गई। प्रभु येशु ने मेरे साथ एक बड़ा अदभुत् चमत्कार ही कर दिया। आल्लेलूया! **फ्रीदा,** फरीदाबाद

मैं, **खुशबू** (उम्र-15 वर्ष), (ऊपर चित्र में दायीं ओर से दूसरी) यहाँ "जीवन-धाम" की रोग-चंगाई प्रार्थना में कुछ हफ्तों से भाग ले रही हूँ। मेरे घुटनों में पिछले एक महीने से दर्द हो रहा था। पर आज प्रभु येशु ने मेरे घुटनों का दर्द गायब ही कर दिया। आल्लेलूया! **खुशबू,** हरकेश नगर

मैं, **रोशन**(उम्र-24 वर्ष), (ऊपर चित्र में सबसे दायीं ओर) 1 साल से यहाँ "जीवन-धाम" की प्रार्थना सभा में भाग ले रही हूँ। मेरे घुटनों में पिछले 2 साल से बहुत दर्द होता था। आधे घण्टे तक बैठ जाने के बाद मैं उठ ही नहीं पाती थी। फरीदाबाद में मैंने कई डॉक्टरों को दिखाया पर कोई भी इलाज मुझे स्थायी रूप से राहत नहीं दे पाया।

यहाँ जीवन-धाम में आने पर मुझे उठने-बैठने में आराम मिल गया। प्रभु ने जल्द ही मेरी प्रार्थना सुन ली और मेरे घुटनों को पूरी तरह से ठीक कर दिया। प्रभु की स्तुति हो!

रोशन, सुभाष कालोनी

"वही ईश्वर मुझे शान्ति प्रदान करता और मेरा मार्ग प्रशस्त कर देता है। वह मेरे पैरों को हिरनी की गति देता और मुझे पर्वतों पर बनाये रखता है।" (स्तोत्र 18:33-34)

प्रभु येशु ने मुझे दर्शन दिये...और मेरे हृदय को स्वस्थ कर दिया!

प्रभु येशु की स्तुति हो! प्रभु येशु को धन्यवाद!

मैं, **देवली**, यहाँ "जीवन-धाम" की प्रार्थना सभा में पिछले कुछ हफ्तों से आ रही हूँ। मेरे दिल की धड़कन बहुत तेज़ चलती थी और मुझे पिछले कई महीनों से दिल में दर्द व कभी-कभी घबराहट भी होती थी। दवाओं से मुझे कोई राहत नहीं मिली। पर आज मुझ पर प्रभु येशु ने अपनी अमूल्य कृपा करके मेरे दिल को पूर्ण रूप से स्वस्थ कर दिया। मैंने आज भजन गाते समय पहली बार प्रभु येशु को सफेद कपड़े पहने हुए दर्शन में देखा। उन्होंने अपना हाथ बढ़ाकर मुझे आशीर्वाद दिया और **"ठीक है, ठीक है"** बोलकर धीरे-धीरे चले गये। यह सब देखकर मेरा सारा शरीर थर-थर काँपने लगा और डर के मारे मैंने अपनी आँखें खोल लीं।

तभी बहनजी ने स्टेज पर यह घोषणा की कि एक महिला को, जो बैंगनी रंग का घाघरा पहने हुए है, प्रभु येशु आशीष दे रहे हैं। और वो महिला मैं ही हूँ जिसे प्रभु येशु के दर्शन पाने का सौभाग्य मिला, जिसके दिल को प्रभु ने चंगा कर दिया और जिसे उसके कपड़े के रंगों से इतनी भारी भीड़ से अलग कर प्रभु ने अपना साक्ष्य देने के लिए बुलवा लिया। प्रभु का लाखों-लाखों बार धन्यवाद। **देवली,** फरीदाबाद

"उसे किसी जड़ी-बूटी या लेप से स्वास्थ्यलाभ नहीं हुआ, बल्कि प्रभु! तेरे शब्द ने उस चंगा किया था।" (प्रज्ञा 16:12)

प्रभु येशु ने कहा, "दुष्ट का सामना नहीं करो। यदि कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे, तो दूसरा भी उसके सामने कर दो। जो मुकदमा लड़ कर तुम्हारा कुरता लेना चाहता है, उसे अपनी चादर भी ले लेने दो।" (मत्ती 5:39-40)

पृष्ठ 2 का शेष भाग ❀

1. अविश्वास - (मत्ती 13:57-58)

2. अल्पविश्वास - येशु ने अपने शिष्यों से कहा, "अल्पविश्वासियों! डरते क्यों हो?" तब उन्होंने उठ कर वायु और समुद्र को डाँटा और पूर्ण शान्ति छा गई। **(मत्ती 8:26; 14:31)**

3. दुर्बल विश्वास - यदि कोई विश्वास में दुर्बल हो, तो आप उसकी पापशंकाओं पर विवाद किये बिना उसका स्वागत करें।**(रोमियों 14:1)**

4. सन्देहजनक विश्वास - किन्तु उसे विश्वास के साथ और सन्देह किये बिना प्रार्थना करनी चाहिए...ऐसा व्यक्ति यह न समझे कि उसे ईश्वर की ओर से कुछ मिलेगा।**(याकूब 1:6-8; मत्ती 21:21)**

5. निर्जीव विश्वास - (याकूब 2:14-26)

6. विश्वास व्यर्थ - यदि मसीह नहीं जी उठे, तो हमारा धर्मप्रचार व्यर्थ है और आप लोगों का विश्वास भी व्यर्थ है।**(1कुरिन्थियों 15:14)**

7. निष्कपट विश्वास - इस आदेश का लक्ष्य वह प्रेम है, जो शुद्ध हृदय, निर्दोष अन्तःकरण और निष्कपट विश्वास से उत्पन्न होता है। **(1 तिमथी 1:5; 2 तिमथी 1:5)**

8. दृढ़ विश्वास - येशु ने कहा, "इस्राएल में भी मैंने किसी में इतना दृढ़ विश्वास नहीं पाया।"**(मत्ती 8:10)**

9. सुदृढ़ विश्वास - (कलोसियों 2:5; प्रकाशना 13:10, 14:12)

10. विश्वास में परिपूर्ण-(प्रेरित-चरित 11:24)

11. विश्वास में धनी - क्या ईश्वर ने उन लोगों को नहीं चुना है, जो संसार की दृष्टि में दरिद्र हैं, जिससे वे विश्वास के धनी हो जायें और उस राज्य के उत्तराधिकारी बनें, जिसे उसने अपने भक्तों को प्रदान करने की प्रतिज्ञा की है?**(याकूब 2:5)**

12. मूल्यवान् विश्वास - आप लोगों के लिए, जो विश्वास करते हैं, वह पत्थर मूल्यवान् है।**(1पेत्रुस 2:7; 2पेत्रुस 1:1)**

13. परमपावन विश्वास - किन्तु प्रिय भाइयों! आप अपने परमपावन विश्वास की नींव पर अपने जीवन का निर्माण करें।**(यूदस 20)**

आओ, हम विश्वास भरे जीवन का स्वाद लें। हम केवल आँखों-देखी बातों पर नहीं, बल्कि विश्वास पर चलें **(2कुरिन्थियों 4:7)**, विश्वास में जियें **(गलातियों 3:11)**, उसी के द्वारा विजय प्राप्त करें **(1योहन 5:5)** जिससे हमारा आध्यात्मिक विकास होता जाये और हम परिपूर्णता तक पहुँच जायें।**(एफेसियों 4:13; 6:16)**

मिस्सा बलिदान का समय:

मकान न०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में हर इतवार - शाम 6:30 बजे प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। मंगलवार को मिस्सा प्रातः 6:30 बजे चढ़ाया जाता है। पिछले 5 सालों से लगातार 24 घण्टों की पवित्र आराधना यहाँ चलती आ रही है। आप भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं।

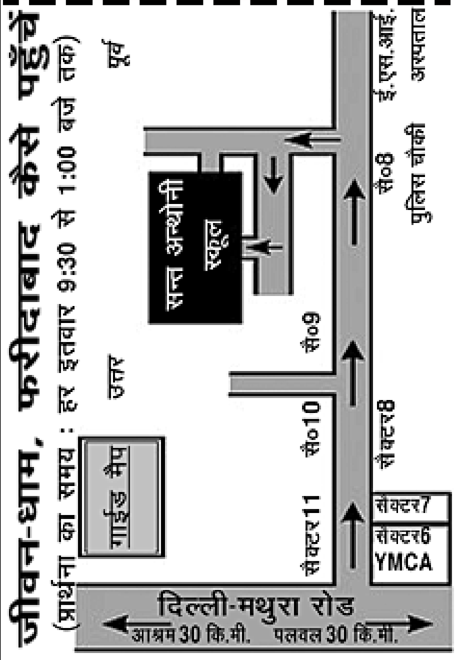

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

11) कुरिन्थियों के नाम दूसरा पत्र
a) अध्याय 1-3

सन्त पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को लिखे दूसरे पत्र के पहले तीन अध्यायों **-अध्याय 1-3** से लिये गये इन निम्नलिखित वाक्यों में आपने रिक्त स्थान भरने हैं तथा उत्तर में उनकी वाक्यांश संख्या भी अध्याय सहित बतलानी है।

1) ____ पत्र____ से नहीं, बल्कि____ ईश्वर के______ से,_____ की________ पर नहीं, बल्कि मानव_____ की______ पर लिखा हुआ है।

2) मैं_____ के_________ का______ करते ________ पहुँचा और वहाँ_____ के_____ के लिए _____ खुला था।

3) उसी ने_____ पर अपनी______ लगायी और _________ के रूप में हमारे _____ को पवित्र ________ प्रदान किया है।

4) मैंने बड़े _____ में, _____ की गहरी _____ सहते हुए और_____ बहा–_____ कर वह _____ लिखा।

5) इस _______ परमश्रेष्ठ ______ के सामने वह_______ महिमा अब________ हो गयी है।

6) हमारा _____ ईश्वर, और ____ येशु ______ आप______ को______ तथा_____ प्रदान करे।

7) क्योंकि _____ तो ______ है, और जहाँ _____ का________ है, वहाँ _________ है।

8) क्योंकि _____ चाहे ______ प्राप्त करें या ________ हो जायें,_____ उनके बीच_______ के लिए ______ की ______ है।

9) और_____ विधान_______ का नहीं, बल्कि _______ का है; क्योंकि _____ तो ______ हैं, ______ आत्मा __________ है।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

10) कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र
e) अध्याय 13-16

1) **मिट्टी, मनुष्य, मिट्टी, मनुष्य, स्वर्ग, मनुष्य, स्वर्गी।(15:48)**
2) **ढ़ाँक, विश्वास, आशा, सह।(13:7)**
3) **नमस्कार, हाथ, लिखा, पौलुस।(16:21)**
4) **स्पष्ट, भाषाँए, नहीं, अविश्वासियों, चिन्ह-स्वरूप, भविष्यवाणी, विश्वासियों।(14:22)**
5) **पशुओं, मछलियों, देह, प्रकार। (15:39)**
6) **भविष्यवाणी, मनुष्यों से आध्यात्मिक, प्रोत्साहन, सान्त्वना, बातें। (14:3)**
7) **मसीह, जी, धर्मप्रचार, आप, विश्वास, व्यर्थ। (15:14)**
8) **पेन्तेकोस्त, एफ़ेसुस, रहूँगा। (16:8)**
9) **अन्त, नष्ट, शत्रु, मृत्यु।(15:26)**
10) **भविष्यवाणियाँ, भाषाँए, ज्ञान, प्रेम, अन्त।(13:8)**

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सति) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही-सही उत्तर समय पर देंगे।

घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

Visit us at our website:
www.jeevandham.org
New E-mail: anthonyat696@yahoo.com
Please do not send/reply e-mail to: justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित...........हैं ?
क्या आप दु:खी...........हैं ?
क्या आप रोगी...........हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति...........है ?

आपको सान्त्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रभु येशु ने कहा, "अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो। इस से तुम अपने स्वर्गिक पिता की सन्तान बन जाओगे।" (मत्ती 5:44-45)

Edited & Published by Anthony, JEEVAN DHAM, 696/Sec-22, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.